तुलसी प्रज्ञा

TULSĪ PRAJÑĀ

वर्ष 33 • अंक 129 • जुलाई-दिसम्बर, 2005

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं
(मान्य विश्वविद्यालय)
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-129 JULY—DECEMBER, 2005

Patron

Sudhamahi Regunathan
Vice-Chancellor

Editor in

Hindi Section

Dr Mumukshu Shanta Jain

English Section

Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial-Board

Dr Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satya Ranjan Banerjee, Calcutta
Dr R.P. Poddar, Pune
Dr Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr J.P.N. Mishra, Ladnun

Publisher :
Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL.-129 JULY —DECEMBER, 2005

Editor in Hindi
Dr Mumukshu Shanta Jain

Editor in English
Dr Jagat Ram Bhattacharyya

Editorial Office
Tulsī Prajñā, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
LADNUN-341 306, Rajasthan

Publisher : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Type Setting : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306, Rajasthan

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015, Rajasthan

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers, the Editors may not agree with them.

अनुक्रमणिका/CONTENTS

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
श्रावकाचार आचार, आहार और विचार का विवेक	प्रो. प्रेम सुमन जैन	1
श्रावकाचार तब और अब	जितेन्द्र बी. शाह	15
श्रावक-आचार की प्रासंगिकता का प्रश्न	प्रो. सागरमल जैन	21
परिग्रह परिमाण व्रत आज भी प्रासंगिक है	डॉ. धर्मचन्द जैन	46
आधुनिक युग में श्रावकाचार का अस्तित्व	डॉ. अनेकांत कुमार जैन	53
गृहस्थाचार-परिपालन में नारी की भूमिका	श्रीमती डॉ. सरोज जैन	63
श्रावकाचार गुण, लक्षण और अणुव्रत	डॉ. शेखरचन्द्र जैन	74
श्रावकाचार और रात्रि भोजन विरमण व्रत	डॉ. अशोक कुमार जैन	82

अंग्रेजी खण्ड

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	91
Jain Kurumbers : An Account of their life and Habits	M.D. Raghvan	103
A Note on the Worship of Images in Jainism	Priyatosh Baneerjee	110

Postal Department : NUR 08 R.N.I. No. 28340/75

यः स्याद्वादी वचनसमये योप्यनेकान्तदृष्टिः
श्रद्धाकाले चरणविषये यश्च चारित्रनिष्ठः।
ज्ञानी ध्यानी प्रवचनपटुः कर्मयोगी तपस्वी,
नानारूपो भवतु शरणं वर्धमानो जिनेन्द्रः॥

जो बोलने के समय स्याद्वादी, श्रद्धाकाल में अनेकान्तदर्शी, आचरण की भूमिका में चरित्रनिष्ठ, प्रवृत्तिकाल में ज्ञानी, निवृत्तिकाल में ध्यानी, बाह्य के प्रति कर्मयोगी और अन्तर् के प्रति तपस्वी है, वह नानारूपधर भगवान् वर्द्धमान मेरे लिए शरण हो।

बुराई करने वाला अवश्य ही बुरा होता है पर बहुत अच्छा तो वह भी नहीं जो बुराई के भार से दब जाए। बुराई को पैरों से रौंदकर चलने वाला ही अपने मन को मजबूती से पकड़ सकता है।

प्रकाशक - सम्पादक - डॉ. मुमुक्षु शान्ता जैन द्वारा जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के लिए प्रकाशित एवं जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर द्वारा मुद्रित